मवेशी मछली खाएं, तो मीथेन कम छोड़ते हैं

ककार्बन डाई आक्साइड के समान मीथेन भी एक ऐसी गैस है जो ग्रीनहाउस असर पैदा करती है। अर्थात धरती का तापमान बढ़ाने में इसका योगदान होता है। यदि मीथेन और कार्बन डाई ऑक्साइड बराबर आयतन में हों तो मीथेन का ग्रीनहाउस असर 20 गुना ज़्यादा होता है। दुनिया में कुल मीथेन में से 22 फीसदी पालतू मवेशियों के पेट में बनती है। अतः मवेशियों के पेट में मीथेन का उत्पादन कम करना वैज्ञानिकों के सरोकार का विषय रहा है। इस दिशा में किए जा रहे प्रयासों में से एक में कुछ सफलता मिली है।

बेल्जियम के गेन्ट विश्वविद्यालय के वीर्ले फीवेज़ और उनके सहयोगियों ने भेड़ों को सामान्य चारे की बजाय मछली का तेल मिला चारा खिलाया। पता चला है कि इससे भेड़ों के पेट में मीथेन उत्पादन काफी कम हो गया।

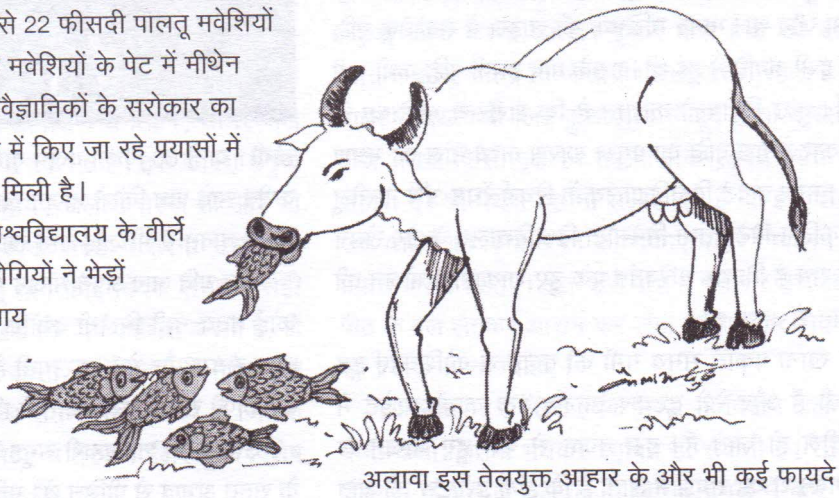

पहले तो वीर्ले फीवेज़ ने चारे में मछली का तेल मिलाया और उसमें भेड़ों के पेट से प्राप्त तरल को मिलाकर देखा। भेड़ों के पेट में तमाम किस्म के बैक्टीरिया निवास करते हैं। ये बैक्टीरिया चारे के सेल्यूलोज़ को पचाते हैं और इस प्रक्रिया में खूब मीथेन बनती है। जब इस चारे में मछली का तेल मिला दिया गया तो मीथेन उत्पादन 80 फीसदी कम हो गया। जब यही चारा भेड़ों को खिलाया गया तो उनके पेट में मीथेन उत्पादन में इतनी ज़ोरदार कमी तो नहीं आई। फिर भी 25-40 फीसदी तक की कमी देखी गई।

अच्छी बात यह रही कि मछली का तेल मिलाने से भेड़ों की सामान्य पाचन क्रिया में कोई गड़बड़ी नहीं हुई। इससे पहले जब भी इस तरह के तेलयुक्त आहार का उपयोग किया गया था, तब भेड़ों की पाचन क्रिया बुरी तरह अस्त-व्यस्त हो जाती थी।

फीवेज़ का विचार है कि मीथेन उत्पादन में कमी के अलावा इस तेलयुक्त आहार के और भी कई फायदे हैं। एक तो इन भेड़ों के पेट में जिस तरह के वसा अम्लों की मात्रा बढ़ी, वे कोलेस्टरॉल कम करने में मददगार हैं। फीवेज़ को उम्मीद है कि इन भेड़ों के मांस में भी ये वसा अम्ल होंगे जो इंसानों को भी फायदा पहुंचाएंगे।

अब समस्या यह है कि एक तो गाय-भैंस को मछली कौन खिलाए। दूसरी समस्या यह है कि इस आहार पर जीने वाले मवेशियों के मांस, दूध वगैरह में मछली की गंध आएगी। तीसरी समस्या यह है कि मछलियों की तादाद पहले ही घट रही है और अब इस कारण और घटेगी। फीवेज़ का सुझाव है कि यही तेल किसी शैवाल या अन्य जीव से प्राप्त किया जाए तो इन समस्याओं से निपटा जा सकता है। ***(स्रोत फीचर्स)***